तृतीय अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' के कथ्य का अनुशीलन"

तृतीय अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' के कथ्य का अनुशीलन"

❑ प्रास्ताविक

3.1 कथ्य का परिचय और अर्थ

3.2 कथ्य का सामर्थ्य

- 3.2.1 आस्वाद परक संवेदना
- 3.2.2 मूल्यगत संवेदना

3.3

- 3.3.1 कथ्य की व्याप्ति
- 3.3.2 उपन्यास में कथ्य का बोध
- 3.3.3 चित्रात्मकता

3.4 कथ्य का विश्लेषण

- 3.4.1 प्रथम खण्ड
- 3.4.2 दूवितीय खण्ड
- 3.4.3 तृतीय खण्ड
- 3.4.4 संवेदनशीलता
- 3.4.5 प्रामाणिकता
- 3.4.6 संक्षिप्तता

3.5 प्रमुख कथ्य

- 3.5.1 मोहभंग
- 3.5.2 छटपटाती नैतिकता
- 3.5.3 कथ्य की पूरकता

3.6 गौण कथ्य

- 3.6.1 कथ्य की समग्रता
- 3.6.2 सृजनशीलता

3.7 कथ्य में परिवेश

- 3.7.2 प्राकृतिक परिवेश
- 3.7.3 प्राकृतिक में गंगा घाट
- 3.7.4 कथ्य का पारिवारिक परिवेश
- 3.7.5 1857 का गदर
- 3.7.6 जोगेश्वरी के माइके का वर्णन
- 3.7.7 राजन का पारिवारिक परिवेश
- 3.7.8 कथ्य में ऐतिहासिक परिवेश
- 3.7.9 कथ्य में संवाद

3.8 कथ्य में संवाद

- 3.8.1 जोगेश्वरी और राजन के संवाद
- 3.8.2 बच्चों का बनारसी गीत
- 3.8.3 दादी अम्मा के संवाद
- 3.8.4 राधेलाल के प्रति परिवार वालों के भाव
- 3.8.5 संवादों में आदर्श
- 3.8.6 संवादों में राष्ट्रीय राजनीतिक जनचेतना के भाव
- 3.8.7 माँ-बाप की जिम्मेदारियों से मुँह फेर लेना

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' के कथ्य का अनुशीलन"

❑ प्रस्तावना -

मिश्र जी के 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का कथ्यगत अनुशीलन करने का कारण यह है कि रचना सृष्टि की दृष्टि से उपन्यास का कथ्य क्या संकेत देता है? मिश्र जी ने अपने जीवन के अनुभवों को मनुष्य समाज जीवन की घोर वास्तविकता को अभिव्यक्त किया है। अपने अनुभवों का आधार लेकर उपन्यास के रचना संसार को बढाया है। उपन्यास में वास्तविकता का पुट इतनी गहराई से नजर आता है कि इसे पढ़ते समय यह प्रतीत होता है कि, हम यह उपन्यास नहीं पढ़ रहे हैं बल्कि अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में आनेवाली हर घटना को स्वयं घटित होते हुए देख रहे हैं। यह हमारी अपनी ही जीवन-गाथा है। जीवन में आनेवाले अनुभवों, हर दूसरे क्षण क्या हानेवाला है इस बात से हम बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं। मिश्र जी के इस उपन्यास में इसी तरह की घटनाओं का चित्रण है। कथन करते-करते कथावस्तु का निर्माण होने लगता है। उपन्यास की रचना प्रक्रिया को कथन करना कथ्य है। कथन करने से वस्तु विन्यास विकसित होता है। घोर सामाजिक वास्तविकता को पुनर्निर्मित करने के लिए कथ्य में सजीवता होना आवश्यक बन जाता है। मिश्र जी का यह उपन्यास पारिवारिक यथार्थता को बताता है साथ ही पारिवारिक ऐतिहासिकता को भी सहज सुंदर कथन से प्रकट करता हे।

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास की विशिष्टता, कथ्य की सरलता, कथ्य की अभिव्यक्ति, कथ्य की विश्वसनियता और कथ्य की वास्तविकता उपन्यास को प्रतिबिंब की तरह प्रकट करती है।

3.1 कथ्य का परिचय और अर्थ -

"कथ्य का अर्थ है कहने योग्य, कथनीय अर्थात् कही गयी बात।"[1]

उपन्यास में किस तरह का कथन किया गया है उसका परिचय देना स्वाभाविक हो जाता है। कथ्य का अनुशीलन करने के लिए उसे उपन्यास में समाविष्ट कथन की परिधि में बाँधकर कथ्यों के आधार पर उपन्यास का अंकन किया जाता है।

कथ्य संबंधी डॉ. आशा मेहता के विचार सराहनीय लगते हैं - ''कथ्य जीवन का अंकन करते हुए उसके प्रति लेखक की अनुभूत जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति ही कथ्य है। निजता से जन्मी अनुभूति के कारण उसकी विशिष्टता सामाजिक तथा वैयक्तिक संघर्षों से जुड़ी होने के कारण इसमें यथार्थ की खुली स्वीकृति व उस यथार्थ को नई दिशा देने का प्रयास रहता है।''[2]

कथ्य की दृष्टि से 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास कथन की मिसाल को सहजता से प्रस्तुत करने में सफल हुआ है। मिश्र जी ने कथ्य की सामग्री को प्रचुरता से भर दिया है। इस उपन्यास का कथ्य अत्यंत व्यापक बन पड़ा है। देखने में छोटे आकार के इस उपन्यास में कथ्य की समग्रता महाकाव्यात्मकता को दर्शाती है। इसमें कई तरह के पात्रों को समाविष्ट किया है और मुख्य पात्रों से लेकर गौण पात्रों की जीवन की कथाओं को, उनकी भावभंगिमाओं को और उनकी विड़ंबनाओं को अत्यंत सहजता से चित्रित किया है। कथ्य के द्वारा पात्रों के अतीत को और उनके ऐतिहासिक सत्य को मिश्र जी उद्घाटित करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि तीन पीढ़ियों का बदलते परिवेश के साथ होता परिवर्तन जब मिश्र जी कथित करते हैं तो उपन्यास प्रामाणिकता की उच्चतम कोटी पर पहुँचता है।

'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास में मिश्र जी ने ''संस्कृति, रिश्तों के माध्यम से पनपने वाली सामाजिकता और पारम्परिक संबंधों के ताने-बाने क्रमश: किस प्रकार बिखर जाते हैं, आदमी घर से दूर जाते समय कैसे विवाह को एक वैयक्तिक सुख-सुविधा का साधन मानकर चलता है, इसका महत्वपूर्ण चित्र अंकित किया है और यह विघटन और बिखराव घर के टुकडों के साथ मानसिक लगाव के सूख जाने की प्रक्रिया में आदमी कैसे एक शरीर सुख संवेदना के भोग तक सीमित हो जाता है, इसको बहुत ही शक्तिपूर्ण ढंग से चित्रांकित किया है। पश्चिमी प्रभाव के संमोहन में भारतीय मध्यवर्ग का गाँव से नगर की ओर आगमन अन्ततोगत्वा उसको सभी दृष्टि से अकेला बना देता है। एक तरह से यह समस्त मध्यवर्गिय परिवारों का सांस्कृतिक, सामाजिक और मानसिक विघटन बिखराव है।''[3]

कथ्य को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना बिना रूके कहते जाना यह उसकी सहज अभिव्यक्ति की विशेषता है।

3.2 कथ्य का सामर्थ्य -

कथ्य का सामर्थ्य उसकी आंतरप्रक्रिया से होता है। मिश्र जी ने कथ्य के सामर्थ्य को बनाते समय सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को सहजता से चित्रांकित किया है। कथ्य में आवश्यकतानुसार चित्रात्मकता, आँचलिकता, मनोवैज्ञानिकता नजर आती है। कथ्य का सामर्थ्य कथन करने की विशिष्टता के साथ उभर आता है, इस बारे में डॉ. आशा मेहता के शब्दों में - "कथा को मनोवैज्ञानिक सामाजिक घात प्रतिघातों से स्वाभाविक विकसित करते हुए तथा उनके बीच पात्रों की उनकी विशिष्टता में जीते हुए ही कथ्य की सजीव प्रस्थापना होती है।"[4]

कथ्य का सामर्थ्य बताने के लिए कथ्य को दो विभागों के महत्वपूर्ण संवेदना के तहत परखा जा सकता है।

3.2.1 आस्वाद परक संवेदना :

आस्वाद परक संवेदना में रस भाव, अनुभाव आदि समाविष्ट हैं।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का चित्रण मिश्र जी के संवेदनशील मन से हुआ है। उपन्यास के कथानक में जो भाव अनुभाव है उसमें सहज संवेदना नजर आती है। सन्नी की सारंगी की आवाज, प्रात:काल का वातावरण, कार्तिक स्नान के समय राजन का उस वातावरण में भावविभोर होना आदि सारी बातें आस्वाद परक संवेदना को बताती है। मिश्र जी की लेखनी में इस तरह की संवेदना लबालब भरी है। इस दृष्टि से इसका कथ्यगत विश्लेषण विलक्षण हुआ है।

3.2.2 मूल्यगत संवेदना :

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में कथ्य की मूल्यगत संवेदना नजर आती है। इसमें सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक संवेदना नजर आती है। यह उपन्यास संयुक्त परिवार की ऐतिहासिकता को दोहराता है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन आदि बातों से मूल्यगत संवेदना स्पष्ट होती है। एक ही छत के नीचे रहनेवाला हँसता-खेलता, भरा-पूरा परिवार, जो भारतीय सभ्यता को बनाए रखने के लिए सदा तत्पर रहता है। जोगेश्वरी इस परिवार को एकसंघ बनाने के लिए हमेशा प्रयास करती है, एक कुशल मैनेजर की तरह अपनी जिम्मेदारीयाँ निभाती रहती है।

परिवार की सारी जिम्मेदारी वह अपने बड़े बेटे राधेलाल को सौंप देती है। इस परिवार के प्रति राधेलाल का ध्यान चिरंतन रहे इसके लिए वह अपनी ओर से भरकस प्रयास करती है। पारिवारिक परंपरा को बनाए रखने के लिए जीवन के अंत तक अपना योगदान देती है।

उपन्यास में त्यौहारों के समय का जो वर्णन मिश्र जी ने किया है उससे भारतीय संस्कृति का स्वरूप भी नजर आता है। संस्कृति को चिरंतन बनाए रखने के लिए मिश्र जी के साथ-साथ पात्रों का योगदान दिखायी देता है। परंपरा और संस्कृति के साथ-साथ इसमें सामाजिकता भी नजर आती है। राधेलाल की देश सेवा करने की चाह, कमलाबाई जैसी वेश्या के साथ अच्छे संबंध, परिवार के सदस्य के समान कमलाबाई का सम्मान करना, इसमें सामाजिकता नजर आती है। नैतिकता की दृष्टि से भी ये उपन्यास अपनी एक विशेषता को छोड़ जाता है। कथ्य की मूल्यगत संवेदना में आध्यात्मिकताभी नजर आती है। सन्नी का बच्चों के साथ हनुमान चालिसा पढ़ाना, पूजापाठ करना, जोगेश्वरी का ईश्वर की पूजा में लीन रहना। घर के बच्चों से लेकर बड़ों तक समय-समय पर सभी धार्मिक बातों को बनाए रखने के लिए पूजा में लीन रहना। बड़ों का आदर करना और पूजापाठ से एक-दूसरे की खुशहाली के लिए प्रार्थना करना, एक दूसरे के प्रति सद्भावना, प्रेम और आत्मियता रखना आदि पारिवारिक मेल जोल के साथ आध्यात्मिकता नजर आती है। परिवार को एकसंघ बनाए रखने के लिए परिवार के सदस्यों का योगदान मूल्यगत संवेदना को बताता है।

राधेलाल के अस्तित्व तक पारिवारिक मूल्यगत संवेदना पर आँच नहीं आती किंतू राधेलाल के पश्चात् अगली पीढ़ी में बेबनाव आने लगता है और राधेलाल के पोते तक आते-आते 'पाँच आँगनों वाला घर' का अस्तित्व ही मिट जाता है। मूल्यगत संवेदना यहाँ पर टूटती हुई दिखाई देने लगती है।

इस उपन्यास में जगह-जगह पर कथ्य की मूल्यगत संवेदना का परिपाठ नजर आता है।

3.3.1 कथ्य की व्याप्ति :

मिश्र जी के इस उपन्यास के कथ्य की व्याप्ति बहुत बड़ी है। इसमें महाकाव्यात्मकता जैसी व्यापकता नजर आती है। उपन्यास में तीन पीढ़ियों का चित्रण

किया गया है। 1940 से लेकर 1990 तक के भारतीय समाज में स्थित पारिवारिक चित्रण मिश्र जी ने किया है। भरे-पूरे संयुक्त परिवार की शुरू की स्थिति और धीरे-धीरे उसमें होनेवाला अलगाव पारिवारिक विघटन और बदलते समय में नई पीढ़ियों में आनेवाला परिवर्तन नये विचारों को माननेवाले, नये विचारों के साथ चलनेवाली नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में बेबनाव आने लगता है।

3.3.2 **उपन्यास में कथ्य का बोध :**

'पाँच आँगनों वाले घर' का विस्तार मिश्र जी इस प्रकार कथन करते हैं - "बरगद का वह पेड़ राजन के घर के बाहर था। बरगद के पेड़ की तरफ ही घर का मुख्य दरवाजा था। वहाँ से पिछवाड़े तक फैला लम्बा-चौड़ा घर पाँच आँगनों वाला। कमरों की तो गिनती ही नहीं थी। मुख्य दरवाजे से सटा बैठकखाना था - राजन के पिता का कमरा ... वकालत का दफ्तर ... और उनकी बैठकबाजी के लिए भी बैठकखाने के पीछे घर का सबसे बड़ा आँगन था जिसे गणेश जी वाला आँगन कहते थे। यहाँ मर्दोंवाले कार्यक्रम होते - मुशायरा - कवि सम्मेलन, मुजरा वगैरेह। दूसरे नंबर पर बेलवाला आँगन था। वह नाम शायद इसलिए पड़ गया कि वहाँ बेल के कई पेड़ थे। इसके बाद काली जी वाला आँगन - यह मुख्यत: बहू-बेटियों का आँगन था, जिसे धार्मिक कार्यों और शादी ब्याह के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। इन मौंकों पर वहाँ बड़ी-बड़ी भट्‌टीयाँ खुदतीं। कालीजी वाली आँगन के एक तरफ सदरी दरवाजा था जिसके उपर था नौबतखाना, खुशी के मौकों पर शहनाई यही से बजती थी। दूसरी तरफ हनुमानजी वाला आँगन था। यहाँ राम-लीला, भौडो के नाच वगैरेह होते। सबसे पीछे फटकावा वाला आँगन था। इस आँगन के एक हिस्से में बग्घी, टमटम, इक्का ढिले रहते। पास ही में छोटी-सी घुड़साल थी।"[5]

3.3.3 **चित्रात्मकता :**

मिश्र जी की कथनशैली चित्रात्मकता को प्रकट करती है। उनके उपर्युक्त वर्णन से पाँच आँगनों वाले घर का पूरा का पूरा ढाँचा सामने आ जाता है। इतने बड़े घर की पारिवारिक कश्मकश को वे बताते जाते हैं। कथन करने का अलग अंदाज कथ्य की व्याप्ति को बढ़ाता है। उसमें सजीवता दिखायी देने लगती है। मिश्र जी के कथन करने की विशेषता दिखायी देती है। इस उपन्यास में 50 सालों के भारतीय समाज में आया हुआ

बदलाव और आम तौर पर सामान्य जनता में आनेवाला बदलाव आदि सामाजिक परिवेश को चित्रित किया है। इससे कथ्य और अधिक बढ़ने लगता है। आज तक के साहित्यकारों में इतना विस्तृत कथ्य नहीं आया है। यह हिंदी साहित्य जगत् में एक अलग सा ही प्रयोग है जो प्रेमचंद के उपन्यासों की तरह वास्तविक है, आदर्श है।

3.4 **कथ्य का विश्लेषण -**

'पाँच आँगनों वाला घर' यह गोविन्द मिश्र का आधुनिक उपन्यास है जहाँ एक लम्बे कालखण्ड की कथा को लिया गया है। जिसमें मोहभंग का स्वर प्रमुख है। 1940 से लेकर 1990 तक का विस्तृत चित्रण उन्होंने किया हुआ है।

3.4.1 **प्रथम खण्ड :**

1940 से 1950 तक के कालखंड 'क्षेत्र' इस विभाग में उन्होंने दस सालों में घटित हुई घटनाओं का चित्रण किया है। इसका कथ्य 13 विभागों में विभाजित है।

3.4.2 **द्वितीय खण्ड :**

1950 से 1960 का कथ्यगत विश्लेषण इसमें दिखायी नहीं देता है। इससे यही लगता है कि शायद इन दस वर्ष के कालखण्ड में कोई अप्रिय घटना नहीं घटित हुई हो। इस संबंध में स्वयं मिश्र जी को इन दस सालों के बारे में पूछा गया था। इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था कि यह पाठक पर निर्भर होता है कि इन दस सालों में जो कुछ भी घटित हुआ इसका अंदाजा वे किस तरह से लगाते है। या खुद मिश्र जी को इन दस सालों का विवरण देने की आवश्यकता नही लगी हो। इसी कारण 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में जिस तरह से ऐतिहासिक चित्रण हुआ है उसके अनुसार यह दस साल किसी तरह की कोई घटनाओं को बताते नहीं है।

3.4.3 **तृतीय खण्ड :**

1960 से लेकर 1975 तक के कालखण्ड में 'दीवारें' नामक शीर्षक में मिश्र जी ने संयुक्त परिवार के विघटन को बताया है। शीर्षक के अंतर्गत कथ्य करीब 10 विभागों में विभाजित है। 15 सालों में हुई जीवनगाथा को चित्रित किया है।

1980 से लेकर 1990 तक के कालखण्ड को मिश्र जी 'अन्धी गली' इस शीर्षक के अंतर्गत कथ्य का विवरण देते है। यह कथ्य 11 विभागों में विभाजित है।

15206

3.4.4 **संवेदनशीलता :**

मिश्र जी के 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का कथ्यगत विश्लेषण तीन शीर्षकों में और तीन अलग-अलग कालखण्डों में वर्णित है। इस उपन्यास में कथ्य का ही पुट लबालब भरा हुआ है। मिश्र जी आँखों देखी बातों को जैसे किसी चित्रकार के भाँति चित्रित करते हैं। कहते-कहते कहानी उभरने लगती है और कथ्य विस्तृत होने लगता है। मिश्र जी के संवेदनशील मन से सच्ची बात छुपती नहीं है।

3.4.5 **प्रामाणिकता :**

सच्ची बातों को ज्यों का त्यों चित्रित करना उसका सही विश्लेषण कर उसमें अत्याधिक रोचकता निर्माण करना यह उनकी विशेषता है। उनके कथ्य में आँचलिक और प्राकृतिक चित्रण भी नजर आता है। उनके कथ्य में भारतीय सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्रियता सुखी खुशहाल परिवार आदि बातें समाविष्ट है। उपन्यास के पात्र संयुक्त परिवार को चिरंतन रखने के लिए प्रयास करते हैं।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का कथ्य कुछ इस प्रकार है -

जोगेश्वरी अपने जीवन काल में संयुक्त परिवार बनाने में सफल रहती है और अपनी जिम्मेदारियों को अपने पुत्र राधेलाल को सौंपती है। जब तक राधेलाल इस जिम्मेदारियों पर अपना ध्यान रखते हैं तब तक परिवार की खुशहाली में चार चाँद लगते हैं। किंतु जैसे ही राधेलाल देश प्रेम के लिए पारिवारिक जिम्मेदारी से थोडासा हटते है कि एकल परिवार की नींव हिलने लगती है। राधेलाल के भाईयों में भी परिवर्तन आने लगता है। वह अपने परिवार की नींव अलग बनाने लगते हैं। फिर घर का चूल्हा अलग होने लगता है, घर के आँगनों में और कमरों में दीवारें उगने लगती है और फिर संयुक्त एकल परिवार धीरे-धीरे अपने अलगाव के लिए प्रयत्नशील रहता है। पति-पत्नी और अपने बच्चें इसी में ही पारिवारिक सुख मान लिया जाता है।

3.4.6 **संक्षिप्तता :**

इस उपन्यास में मिश्र जी ने पारिवारिक कथ्य को अत्यंत सूक्ष्मता से कथित किया है। कथ्य इस उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। कथ्य का विश्लेषण करते समय तीन पीढ़ियों की कथाओं को संक्षिप्त में बताया है, फिर भी कथन करने की

क्षमता और विशेषता मिश्र जी के लेखन में दिखायी देती है। कहने का तरीका एक ऐसी मिसाल कायम कर जाता है कि उपन्यास में जीवित मनुष्य के जीवन को आइने में दिखा रहे हो। तीन पीढ़ियों के जीवन का चित्रण उसमें उतर आया है।

मिश्र जी के कथ्य के विश्लेषण से यह बात प्रतीत होती है कि कथ्य के प्रति वे अत्यंत प्रामाणिक दिखायी देते हैं जिसमें किसी तरह की बनावट अथवा नाटकियता नजर नहीं आती है। वास्तविकता को उन्होंने अत्यंत सहजता से वर्णित किया है। मनुष्य जीवन के जीवनक्रम को भी वे इसी प्रकार कथित करते हैं। मानो वह हमारा अपना जीवन हो। मिश्र जी ने कथ्य को बिल्कुल सजीवता में भर दिया है। मिश्र जी के कथन करने का ढंग इतना कुछ बताते जाता है और कहते-कहते एक कथा बन जाती है और यह उनकी एक खासियत है।

3.5 **प्रमुख कथ्य -**

उपन्यास के प्रमुख कथ्य के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं -

3.5.1 **मोहभंग :**

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के सभी पात्र अपने परिवार को सदैव बनाए रखने का मोह रखते हैं। जोगेश्वरी, राधेलाल और राजन अपने परिवार को एकसंघ बनाने के लिए अक्सर प्रयास करते रहते हैं। अपने परिवार के प्रति सचेत रहते हैं। अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए सदा तत्पर रहते हैं। तीन पीढ़ियों के तीन सदस्य हैं। सबसे पहले हैं जोगेश्वरी जो जीवन भर अपने परिवार को बनाने में सफल तो रहती है किंतु राधेलाल के न रहने के बाद परिवार का सारा सुख चैन ही मिट जाता है और अंत में उसका मोहभंग होता है।

राधेलाल देश सेवा करने की ठान लेने हैं तभी अंग्रेज अधिकारियों द्वारा राधेलाल को पकड़ने के लिए पुलिस उनके पीछे लगती है तो उन्हें अंडरग्राऊंड होना पड़ता है, घर से बाहर भटकते रहना पड़ता है और ऐसे में पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सँभालना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। राधेलाल का पारिवारिक जिम्मेदारियों से हटना ही खुशहाल एकल परिवार को बिखेर देता है। इसी तरह राधेलाल का अंत भी देश प्रेम के मोह में फँसकर होता है। देश की सेवा करते-करते पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना कठीन हो

जाता है और इसी तरह अंत में उनका मोहभंग हो जाता है। राधेलाल दूसरी पीढ़ी के सदस्य हैं और जोगेश्वरी के बेटे 'पाँच आँगनों वाला घर' के उत्तराधिकारी थें।

तिसरी पीढ़ियों के सदस्य है राधेलाल के बेटे जिस पर राधेलाल भरोसा करते हैं। राधेलाल के बाद उनके दो बेटे मोहन और राजन पर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ आन पड़ती हैं। मोहन का परिवार अलग होता है और राजन का अलग। मोहन का परिवार फिर भी सुखी, खुशहाल परिवार है किंतु राजन का परिवार अपने सुख-चैन के लिए स्वार्थ की परिसीमा तक पहुँचता है। तिसरी पीढ़ी के राजन के परिवार की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है। इसी कारण राजन को अपने पिता और दादी से भी अधिक दु:ख झेलने पड़ते हैं। अपनी पत्नी और बच्चों के मोह में रहने की इच्छा रखनेवाले राजन ने 'पाँच आँगनों वाला घर' को कब का छोड़ दिया हुआ होता है किंतु जब भी कोई पारिवारिक समस्या होती है तो वह पाँच आँगनों वाले उस भरे-पूरे घर को याद करने लगता है। दादी और पिताजी की पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने की खूबी को याद करके वह उन्हें सबसे श्रेष्ठ मानने लगता है।

राधेलाल के पश्चात् पाँच आँगनों वाले घर के सदस्य राजन को पारिवारिक मोहभंग होता है। नई पीढ़ियों के नये विचार और पाश्चात्यों के अंधानुकरण से भारतीय सभ्यता और पारिवारिक एकता को अमान्य करते हैं और इसी कारण पाँच आँगनों वाले घर का विघटन होने लगता है। यही पर पारिवारिक सदस्यों का मोहभंग होता दिखायी देता है।

समीक्षक डॉ. प्रेमशंकर जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास को ''मोहभंग का दारूण दस्तावेज'' ऐसा कहा है। उनके शब्दों में - ''कथा स्वतंत्रता संघर्ष से प्रारंभ होकर 1990 तक आती है जिसमें मोहभंग का स्वरूप प्रमुख है। 'पाँच आँगनों वाला घर' अपने शीर्षक से ही टुटती सम्मिलित परिवार व्यवस्था का बोध करता है जो नए सामाजिक दबावों की एक अनिवार्य परिणती है। कथाकार ने बनारस के माध्यम से सामंति परिवेश का वर्णन पृष्ठभूमि के रूप में किया है। टूटता सामंतवाद और उसके स्थान पर आती नयी व्यवस्था। उपन्यास में छोटी-छोटी कई कहानियाँ है, एक बृहत्तर जीवन को पूरा करती, पर कथाकार की कुशलता यह है कि वह उन्हें संयोजित कर कथा को मुख्य धारा में सम्मिलित करता है। उपन्यास का जब अन्त होता है तो कुछ मुख्य मुद्दे उभर आते

हैं। जैसे राजन के माध्यम से टूटते परिवारों की ट्रेजिडी और सक्रिय सुराजी कार्यकर्ता सन्नी का गहरा मोहभंग। मोहभंग की दो दारूण स्थितियाँ है व्यक्ति और समाज।''[6]

मिश्र जी लिखित इस उपन्यास का प्रमुख कथ्य है 'मोहभंग'।

3.5.2 छटपटाती नैतिकता :

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का प्रमुख स्वर मोहभंग तो है ही साथ ही में यह एक छटपटाती नैतिकता की कथा है। ''पाँच आँगनों वाला घर इस उपन्यास में 50 वर्षों के कालखण्ड में तीन पीढ़ियों के उत्थान-पतन और स्वतंत्रता संग्राम की मूल्यधर्मी अनाहत राष्ट्र निष्ठा से लेकर स्वतंत्र भारत की भ्रष्ट व्यवस्था में अत्यंतिक मोहभंग और मूल्यहीनता का काल है। इस कालखण्ड में घटित सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और नैतिक परिवर्तन भी असाधारण रहे हैं। 'पाँच आँगनों वाला घर' इन पचास वर्षों का ऐसा प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करता है जिसमें घटित घटनाओं को परिवेशक परिवर्तनों के साथ ही उस समय की मानवीय सोच, कारणीभूत स्थितियों, दारूण परिणामों और भावों संकेतों को भी गहरी संवेदनात्मक संसक्ति के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस कालखण्ड में होनेवाले नैतिक और सांस्कृतिक ऱ्हास अनेक कारणों और परिणामों को अद्‌भूत कलात्मक संयम के साथ प्रस्तुत किया है।''[7]

''इस उपन्यास की कथा सफल नियोजन और विकास क्रम पाठक को बाँधे रखता है। उसकी उदग्न उत्सुकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। पाठक तादात्म्य भाव से विभिन्न रसात्मक प्रसंगों का आस्वाद लेता है। विचार के धरातल पर पाठक अनुभव और ज्ञान समृद्ध होता चलता है। अपनी सूचनाओं और अनुभवों को वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक विश्लेषण के साक्ष्य की कसौटी पर कसता चलता है। हिन्दी में ऐसा कोई उपन्यास मेरे देखने में नहीं आया जिसमें राजनीतिक घटनाओं को बाकायदा नाम लेकर स्पष्टता और यथातथ्यता से प्रस्तुत किया गया हो और एक सधे हुए कलात्मक संयम के साथ उन्हें हमारे सामाजिक पतन के साथ जोड़ा गया हो निर्भिकता की यह विशिष्टता इस उपन्यास को एक अलग ही पंक्ति में खड़ा करती है। अंतत: पाठक केवल अभिभूत ही नहीं होता अपितु राजनैतिक भ्रष्टता, सांस्कृतिक ऱ्हास और मानवीय पतन के बीच छटपटाती नैतिकता और मूल्य निष्ठा के प्रति सचेतन और आस्थावान भी बनता है।''[8]

3.5.3 **कथ्य की पूरकता :**

डॉ. तिवारी जी के इस मूल्यांकन से मिश्र जी एक विशिष्ट रचनाकार के रूप में उभर आते हैं। निर्भिकता के साथ सामाजिक दायित्व को निभाते हैं। मिश्र जी के उपन्यास में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक आदि बातों का उल्लेख स्पष्टता से नजर आता है। एक के बाद एक कथ्य खुलते हुए दिखायी देते हैं। प्रमुख कथ्य का कोई विशेषीकरण है ऐसा भी नहीं है किंतु उससे जुड़े हुए गौण कथ्य भी प्रमुख कथ्य से घनिष्ठ संबंध प्रस्थापित करते हैं। प्रमुख कथ्य के साथ-साथ चलते हैं। गौण कथ्य प्रमुख कथ्य से निकल तो पड़ते हैं फिर भी वे उतने ही महत्वपूर्ण है जितने की प्रमुख कथ्य! हर पीढ़ी का व्यक्ति इस उपन्यास का केंद्रबिंदु है। इसी कारण प्रमुख कथ्य का आधार लेते हुए इस बात को स्पष्ट करना कठिन हे कि इसका बिंब विधान क्या है, इसका प्रमुख कथ्य क्या है? क्योंकि सभी कथ्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक दूसरे के लिए पूरक है।

उपन्यास का प्रमुख कथ्य गौण कथ्य के साथ-साथ चलता है और उसीसे ही अगले कथ्य का निर्माण होता दिखायी देने लगता है। उपन्यास में परिवार के इतिहास का चित्रण हुआ है। इसी कारण ऐतिहासिक दृष्टि से इसका हर एक पात्र महत्वपूर्ण है। प्रमुख कथ्य से संबंधित पात्र जितने महत्वपूर्ण हैं उतने ही गौण कथ्य से संबंधित पात्र इसलिए प्रमुख कथ्य के साथ-साथ गौण कथ्य भी कथावस्तु को बढ़ाते हैं।

3.6 **गौण कथ्य -**

'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास तीन पीढ़ियों की जीवन गाथाओं को प्रस्तुत करता है। तीन पीढ़ियों में से हर एक पीढ़ी का उत्तरदायित्व सँभालनेवाले पात्र को प्रमुख पात्र के केंद्रबिंदु के स्थान पर रखा जाएगा और उस पात्र से जुड़े हुए दूसरे पात्रों की जीवन गाथा को गौण कथ्य के अंतर्गत समाविष्ट किया जा सकता है। प्रमुख कथ्य को प्रस्तुत करने के लिए गौण कथ्यों का योगदान होता है। गौण कथ्य में प्रमुख कथ्य के कई बिंदू बिखरे होते हैं जिसके कारण प्रमुख कथ्य उँचाई की परिसीमा तक पहुँचता है। इस उपन्यास के गौण कथ्य महत्त्वपूर्ण स्थान पर दिखायी देते हैं। गौण कथ्य उपन्यास का महत्वपूर्ण अंग है।

इस उपन्यास के गौण कथ्य से संबंधित महत्वपूर्ण पात्र इस प्रकार हैं -

1) विविध पात्रों के माध्यम से राजकीय, पारिवारिक और सांस्कृतिक चित्रण।

2) देश के प्रति आस्था रखनेवाली पीढ़ियों का देशप्रेम। राष्ट्र के प्रति निष्ठा रखनेवाले गोवर्ध्दन जैसे पात्र जो गांधीवादी होकर सत्य और अहिंसा जैसी विचारधारा को अपनाते हैं।

3) कमलाबाई जैसी स्त्री उस घर की पारिवारिक समस्या को अपनी समस्या मानती है और शांतिदेवी की मदत के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाती है।

4) हर नई पीढ़ि का अपने स्वार्थ के लिए पुराने विचार परंपराओं को ठुकराना और नये माहौल में अपने ही मस्ती में मस्त होकर जीने की तमन्ना रखना। जिसमें की सन्नी, रम्मो, घनश्याम, बाँके आदि व्यक्तियों से इस उपन्यास का गौण कथानक प्रमुख कथ्य को प्रबल बनाता है।

5) नई पीढ़ी का प्रगतिशीलता में विश्वास जोगेश्वरी की तिसरी पीढ़ी और रांजन के बच्चें प्रगतिशीलता में अधिक विश्वास रखते हैं। जो विदेशी आकर्षण के मोह में फँसकर भारतीय परंपरा, सभ्यता, संस्कृति सब कुछ दाँव पर लगाकर अपनी मनमानी करते हैं जिसके कारण रम्मो को बदलती हुई, प्रगतिशील विचारधारा को रखने वाले पीढ़ी पर अचरज होता है और अपनी ही मनमानी करनेवाली रम्मो को भी एक दिन पूरी तरह से टूटना पड़ता है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में इस गौण कथानक के जरिए मिश्र जी एक सामाजिक सलाह देते हैं कि 'जैसी करनी वैसी भरनी'। जो भुगतना होता है वह इसी जीवन में भुगतना पड़ता है। जैसा कर्म होगा वैसे ही फल मिलेंगे। स्वर्ग और नरक यह तो एक कल्पना मात्र रह जाती है। मनुष्य का क्रिया-कर्म सभी उसी जीवन में होता है जो जीवन वह जीता है। पाप-पुण्य का हिसाब इसी जीवन में चुकता करना पड़ता है। यही वास्तविकता होती है।

3.6.1 **कथ्य की समग्रता :**

मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास कथ्य की समग्रता को प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास को महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा गया है। इसमें एक

साथ कई पीढ़ियों का चित्रण देखने को मिलता है। इसका कलेवर देखने में छोटा दिखायी देता है किंतु उसके अंतर्गत किया हुआ चित्रण समग्रता और व्यापकता को प्रकट करता है। हर एक पीढ़ी के जीवन चक्र को मिश्र जी अत्यंत सहजता और सक्रियता से आगे बढ़ाते है फिर भी कथ्य कही बिखरता नहीं है। कथ्य अतीत से होकर वर्तमान में और वर्तमान से अतीत में जाकर आता है फिर भी अपने अस्तित्व को बनाए रखता है। कथ्य की समग्रता पात्रों के अतीत और वर्तमान में हुई घटनाओं से बढ़ती है। इस बारे में डॉ. प्रेमशंकर जी के विचार सराहनीय लगते हैं - ''एक लम्बे समय को कथा में बाँधना सरल नहीं होता और इसके लिए 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। गोविन्द मिश्र जी ने भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य को अंकित करना चाहा है। जो कई बार वर्तमान संदर्भ में बेपहचानासा लगता है। यहाँ लेखक संलग्नता के साथ उपस्थित है जिसे हम रचनाकार की चिन्ता कहते है। गोविन्द मिश्र जी एक यशस्वी कथाकार है और उनके पास स्वयं की अभिव्यक्ति दे सकने की क्षमता है।''[9]

3.6.2 **सृजनशीलता :**

निरंतर सृजनशीलता यह मिश्र जी की सबसे बड़ी विशेषता है। इतना ही नहीं बल्कि किसी विचारधारा विशेष से स्वयं को बराबर मुक्त रखते हुए उनके लेखन यथार्थ और सामाजिकता के प्रति आग्रह पूर्वग्रह की हद तक का है। यह मिश्र जी के लेखन की विशेषताएँ है।

'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास आम आदमी के जीवन की झाँकी को खोलता है। सुबह से लेकर श्याम तक उनके दिनक्रम को हू-ब-हू प्रकट करता है। जिसे पढ़ते समय ऐसा लगता है कि यह हमारी जिंदगी के पन्नों को पलटता है जो बहुत ही अपनासा लगता है। जिसमें हम पूरी तरह से रम जाते है। जिसकी घटनाओं के साथ-साथ हम इतनी घनिष्ठता रखते है तो ऐसा लगता है जैसे हमारे अपने परिवार की बातों को ही मिश्र जी झंझोड़ते है और अपने जीवन में आनेवाली घटना के साथ तादात्म्य स्थापित कर उसके साथ जिये जाते हैं।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का निर्माण करते समय मिश्र जी ने अपने एम.ए. के सहपाठी मित्र के परिवार को बहुत ही नजदीक से देखा था। उस परिवार

की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को उन्होंने परखा, उसकी अनुभूति ली और उसी परिवार की वास्तविकता को अत्यंत गहराई के साथ उपन्यास में भर दिया है। भारतीय घरों का इतिहास वर्तमान और भविष्य को एक ही साथ रेखांकित किया है। जिसमें वे भारतीय घरों को उनके इतिहास को और नई पीढ़ियों के भविष्य की ओर संकेत करते है। इस उपन्यास के कथ्य सम्बन्धि डॉ. चंद्रकान्त बांदिवडेकर जी के कुछ विचार उल्लेखनिय है - ''इस उपन्यास में 'पाँच आँगनों वाला घर' यह केंद्र में है। इसमें भरे-पूरे इस घर के तीन पीढ़ियों के इतिहास का चित्रण करते हुए उन्होंने संयुक्त परिवार, विभाजित एकल परिवार और अन्त में व्यक्ति और उनका मानसिक विघटन दिखाया है।''[10]

मिश्र जी के कथ्यों और अनुभवों की ओर देखकर उनकी सृजनक्षमता की महत्ता नजर आती है। सृजन बुद्धि प्रामण्यवाद की एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे अंतर्मुख होकर मनुष्य अपने मस्तिष्क में भर देता है। ढेर सारी उन घटनाओं को जिसकी उसे समझ है, परख है, निरीक्षण करने की अद्भूत शक्ति है। मिश्र जी के इस उपन्यास में कथ्य की समग्रता इसी पर निर्भर है।

3.7 **कथ्य में परिवेश -**

किसी भी रचनाकार को रचना प्रक्रिया का निर्माण करने के लिए रचना के अनुसार परिवेश की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है। परिवेश ही रचना प्रक्रिया का स्रोत होता है। ''परिवेश की यथार्थता ही कथ्य की यथार्थता को पुष्ट करती है। वातावरण की सजीवता गूढता पात्रों के बाह्य व्यवहारों को ही नहीं वरन् मानसिक द्वंद्व को भी सहज रूप में प्रस्तुत करती है।''[11] परिवेश का कई प्रकार से हो सकता है। जैसे प्रकृति प्रधान, सामाजिक, भावमूलक, पारिवारिक, ऐतिहासिक आदि।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में परिवेश ही कथा का केंद्रबिंदू है। ऐसे में परिवेश के विविध रूपों का सजीव अंकन आवश्यक बनता है।

3.7.1 **प्राकृतिक परिवेश :**

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में प्राकृतिक परिवेश नजर आता है। उपन्यास की शुरूआत प्राकृतिक परिवेश को बताती है। प्राकृतिक परिवेश में संगीत के स्वरों को भी मिश्र जी भर देते हैं। सुबह का मोहमयी वातावरण का वर्णन अत्यंत सजीव

बन पड़ा है। उपन्यास के आरंभ में मिश्र जी ने प्रकृति के रूप को चित्रकार के भाँति शब्दों के माध्यम से चितारा है। वह इस प्रकार ... जैसे कि "सुबह की आवाजें शुरू हो गयी थीं। तरह तरह की छोटी-छोटी घंटियों की तरह चिलकती आवाजें, चिक्-चिक्, चिख चिख टिक टूँ... तिक-तिडिंग चिचिचि, चिया, चिचिचि ... कोई गले से सीधे ठुनकदार छोटे-छोटे गोले बाहर फेंकता हुआ और कोई कुटोक ... कुओक ... कुटोक - फिर चुप। खूबसूरत आवाजों को बेसुरा करती करती काँव ... काँव। विराम चिह्न की तरह एकाएक उठ खड़ी होती - कुकडूँ-कूँ। कुलबुलाहट, बेचैनी, प्रतीक्षा कब सुबह हो और पेड़ की कैद से निकलें आसमान के प्रांगण में चिलकते दौड़ते फिरें।"[12]

इस वर्णन से प्राकृतिक परिवेश के साथ कथित होता प्राकृतिक सौंदर्य दिखायी देता है। पाठक के मन को सुबह की ताजगी की अनुभूति होने लगती है। परिवेश के साथ-साथ कथ्य का विज़न सामने आता है। इस दृश्य को पढ़कर पाठकों का मन रोमांचित हुए बिना नहीं रहता। परिवेश का सजीव अंकन इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है।

3.7.2 प्राकृतिक परिवेश में पंचगंगा घाट :

पंचगंगा घाट का अत्यंत सुंदर वर्णन मिश्र जी करते हैं; कार्तिकी स्नान के लिए उगते उजालों के साथ औरतों का स्नान करके लौटना, किंतू जोगेश्वरी इत्मिनान से गंगा स्नान के लिए चली जाती थी। छोटा राजन भी दादी के साथ चला जाता था। राजन जब भी पंचगंगा घाट का यह विलोभनीय दृश्य देखता तो हर्ष-उल्हसित होता था। गंगा घाट का वर्णन मिश्र जी इस तरह करते हैं - "घाटों की आवाजें, रोशनियाँ गंगा में दूर तक जाती हैं तो उसकी हर लहर, हर उर्मि जैसे और भी जीवन्त हो उठती है। किनारे-किनारे जैसे जल नहीं, सोना पिघलकर बहा जा रहा है। इस बीच एकाएक पौ फटती है ... आवाज नहीं होती पर शंख फूँकना-सा दिखाई देता है, जैसे प्रकृति ने सहसा अपनी बन्द मुट्ठी खोल दी हो जिससे उजास निकलकर बाहर बहने लगी हो। पृथ्वी अलोकित हो उठती है, जैसे किसी प्राणी का जन्म हुआ हो।"[13] प्राकृतिक चित्रण के बारे में डॉ. तिवारी जी के दृष्टि से - "उपन्यास का आरम्भ बनारस की एक ऐसी मनोरम प्रभात से होता है जिसमें मोहित संगीत का स्वर, पक्षियों का लख, एक बड़े संयुक्त परिवार का परिवेश,

कार्तिक स्नान की पवित्र सांस्कृतिक निष्ठा, गंगा स्तुति, तटों पर स्वर्णाभा बिखेरती गंगा की धवल धारा, वातावरण का उल्लास समवेत रूप से आल्हादकारी संभावना के प्रति अश्वस्त करता है। जैसे प्रकृति ने सहसा अपनी बन्द मुट्ठी खोल दी हो जिससे उजास निकलकर बाहर बहने लगी हो।''[14]

प्राकृतिक परिवेश से कथ्य का सजीव अंकन नजर आने लगता है।

3.7.3 **कथ्य का पारिवारिक परिवेश :**

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के कथ्य का मूल संयुक्त परिवार है। इस उपन्यास में मनुष्य समाज के पारिवारिक जीवन को यथासांग प्रस्तुत किया है। तत्कालिक परिस्थिति के अनुरूप पारिवारिक रहन-सहन, तौर-तरीके, पारिवारिक सुख के लिए अपना योगदान देनेवाले परिवार के बुजुर्ग सदस्य अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी निभाने के लिए अंत तक जुटते रहते हैं।

3.7.4 1857 **का गदर :**

उपन्यास में कई पीढ़ियाँ हैं अपनी भूमिका का निर्वाह करती। राजन की दादी जोगेश्वरी और माँ शान्ती परिवार को एकजूट रखना चाहती है। पर बदलते परिवेश में वह संभव नहीं हो पाता। कथ्य का मोड़ बदलते परिवेश के साथ बदलने लगता है। इस घर के सबसे बुजुर्ग सदस्य के रूप में दादी माँ को देखा जा सकता है। भूखे चोर के संबंध में दादी माँ के समय का और 1857 का गदर परिवेश में नजर आता है। तत्कालिन स्थिति में पारिवारिक परिवेश को मिश्र जी अत्यंत सहजता से कथित करते हैं।

3.7.5 **जोगेश्वरी के मायके का वर्णन :**

जोगेश्वरी के मायके के वर्णन में जो परिवेश बताया है वह इस प्रकार है - ''बड़े घर की लड़की थी जोगेश्वरी, जिसे कहते हैं बड़ा घर-परिवार पैसे में भी बड़ा और सदस्यों की संख्या में भी। वे अपने से छोटे घर में ब्याही गई थी, पर उसको लेकर बात-बात में मुँह ठुनका बैठना ... इसकी जगह उन्होंने गम्भीरता को अपनाया। कोशिश यह कि धीरे-धीरे करके इस घर को भी अपने मायके जैसा बना लिया जाए। आकार में लम्बा-चौड़ा, आदमी-औरतों और बच्चों से भरा-पूरा घर भी बना लिया। पैसे के मामले में जरूर वे ससुराल को मायके के बराबर नहीं ला पाई, इसलिए कि वह तो आदमियों का क्षेत्र था।''[15]

पारिवारिक परिवेश को बताते समय मिश्र जी ने परिवार का जो चित्रात्मक वर्णन किया है, वह पात्र के व्यक्तित्व को ही नहीं बल्कि उनकी इच्छा आकांक्षाओं को भी प्रस्तुत करता है। जोगेश्वरी की ससुराल को मायके जैसे बनाने की चाह पारिवारिक परिवेश को बताती है।

राधेलाल पर जोगेश्वरी के संस्कार और शांतिदेवी के मायके का वर्णन उसके मायके के परिवेश को बताकर कथ्य और भी अधिक उपर उठाता है। शांतिदेवी के मायके के वर्णन से पारिवारिक परिवेश की वास्तविकता के साथ कथ्य का विस्तार होने लगता है।

राजन के अनुभवों को मिश्र जी बताते हैं। 'पाँच आँगनों वाला घर' में बीते हुए बचपन राजन अपने बुढापे में याद करता है। अपने अतीत की ओर झाँकने वाले राजन के माध्यम से पाँच आँगनों वाले घर का पारिवारिक परिवेश नजर आने लगता है। अधिक तर पारिवारिक परिवेश से ही उपन्यास का भ्रमण होता दिखायी देता है।

3.7.6 **राजन का पारिवारिक परिवेश :**

उपन्यास में राजन के परिवार के परिवेश में कथ्य का अंत दिखायी देता है। राजन के दो बेटे बंटू, छोटू और बेटी बिट्टो के जीवन में जिस तरह का माहौल है उसी के अनुसार जीना उन्हें पसंद है। इसी कारण किसी भी पारिवारिक परंपरा को निभाने की जिम्मेदारी लेने से इन्कार करते हैं। जीवन जीते हुए एक अलग-सा रवैय्या बनाकर जीना चाहते हैं। बदलते परिवेश के साथ और अपनी इच्छा के अनुसार वे रहने लगते हैं। इसी कारण एकल परिवार का सुख-चैन खत्म होता दिखायी देने लगता है। 1990 के दौर में देश और समाज में जिस किस्म का माहौल है उसी के अनुसार विदेशी आकर्षण और बदलते समाज के साथ-साथ बदलने की भावना से 'पाँच आँगनों वाला घर' से संक्रमित नई पीढ़ी अपने मनमुटाव से आधुनिक परिवेश के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है। जिसका दु:ख माता-पिता को टूटते परिवार के विघटन से देखना पड़ता है। बदलते परिवेश के साथ-साथ पारिवारिक विघटन के कथ्य को मिश्र जी इस प्रकार बताते हैं - "कितना बड़ा संसार था वह जहाँ से राजन का जीवन शुरू हुआ, क्या नहीं था वहाँ - देशप्रेम, संगीत, कविता, उत्सर्ग, कर्म, वैराग्य - जो-जो जीवन में हो सकता है ... जैसे बचपन में

ही सबकुछ सामने परोस दिया जाता था कि बेटा यह है जीवन के पत्तर में ... चुन लो अपने लिए, जो चाहो। वहाँ से चलकर राजन कहाँ पहुँचा? तब पाँच आँगनों का घर था ... आज कितने आँगन और कितने घर हो गए ... बंटू का एक, उसके लड़के का एक ... एक बिट्टो का, एक छोटू का, एक राजन-रम्मो का। इत्तफाक कि पाँच वे भी होते हैं ... पर आँगन कहाँ हैं, घर तो कहीं है ही नहीं। बहुत-बहुत करके छतें हैं। वे भी नहीं, लोग ढूँढ रहे हैं ... राजन भी एक छत की तलाश में है। सब कुछ इतनी दूर तक बिखर गया कि अब सिर्फ धब्बे दिखते हैं ... बहुत दूर विदेश में रेलें छोड़ता-पकड़ता बंटू, नफरत और द्वेष में डूबता उतरता छोटू और तृष्णा के जंगल में कहीं उलझी एक पतली-सी लड़की ... उनकी लड़की बिट्टो। इसके अलावा कुछ नहीं दिखता ... कहाँ है राजन के भाई, उनकी सन्तानें, उनके सुख-दुःख? उन्हें देखने की आदत बीच में ही कहीं जाती रही। जैसे संगीत, शायरी और नाटक बीच कही छूट गए थे।''[16]

राजन द्वारा कथित इन विचारों से मिश्र जी के कथनीय ढंग की विशिष्टता और कथ्य की एकसूत्रता का प्रामाणिकरण और परिवेश की सजीवता का अंकन प्रकट होता है।

3.7.8 कथ्य में ऐतिहासिक परिवेश :

किसी इतिहासकार के भाँति मिश्र जी ने इस उपन्यास का निर्माण किया है और इसी तरह के इतिहास में तत्कालिन परिस्थिति की वास्तविकता को बताया जाता है। बीती हुई घटनाओं की क्रमबद्ध संरचना इतिहास है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में 1940 से लेकर 1990 तक के कालखण्ड में संयुक्त परिवार में घटी हुई घटनाओं का चित्रण किया है। इसमें उन्होंने एकल परिवार में रहनेवाले सदस्यों के जीवन की समग्रता को ऐतिहासिक तौर पर प्रस्तुत किया है। तीन पीढ़ियों की जीवन गाथा को एक साथ ऐतिहासिक कसौटी पर उतारने में मिश्र जी सफल हुए हैं। हिंदी उपन्यास साहित्य में इस तरह के उपन्यास, बृहद् कथ्य का निर्माण करनेवाले मिश्र जी पहले व्यक्ति है। जो इतने लम्बे समय की अनुभूति को एकदम से उपन्यास में रख देने की क्षमता मिश्र जी के लेखन में दिखायी देती है। इससे इनकी निरीक्षण क्षमता और प्रखर बुद्धिमत्ता सामने आती है।

" 'पाँच आँगनों वाला घर' पचास वर्षों का ऐसा प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करता है। जिसमें घटित घटनाओं परिवेशिक परिवर्तनों के साथ ही उस समय की मानवीय सोच, कारणीभूत स्थितियाँ, दारूण परिणामों और भावी संकेतों को भी गहरी संवेदनात्मक संसक्ति के साथ प्रस्तुत किया है।"[17]

मिश्र जी ने पारिवारिक सत्य को बदलती पीढ़ी के साथ बदलती मानसिकता को और नई पीढ़ी के बदलते रवैये की ऐतिहासिकता को चित्रित किया है। "गोविन्द मिश्र पात्रों के माध्यम में भारतीय इतिहास के आधुनिक इतिवृत्त को पूरा करना चाहते हैं - बलिपंथी स्वतंत्रता से लेकर विचित्र वर्तमान परिदृश्य तक। नैतिकता मूल्यवता से चलकर कहानी टूटते बिखरते मूल्य संसार और गहरे मोहभंग तक आती है। जोगेश्वरी सम्मिलित की मुखिया, बेटा, राधे, फिर राजन और अंत में छोटू इस प्रकार चार पीढ़ियाँ इस उपन्यास में है।"[18]

डॉ. तिवारी और डॉ. प्रेमशंकर जी ने इस उपन्यास को पारिवारिक इतिहास का प्रामाणिक विवरण ऐसा कहा है। आज तक के हिन्दी उपन्यास साहित्य में ऐसा विवरण दिखायी नहीं देता है। इस तरह का एक अनोखा प्रयोग मिश्र जी से हुआ है। इसी प्रकार पारिवारिक इतिहास को बताने से कथ्य का ऐतिहासिक परिवेश सामने आया है। परिवेश से कथ्य और अधिक प्रामाणिक रूप से उभर आता है और कथ्य को चरम सीमा तक पहुँचाता है। समय के अनुसार परिवर्तन होकर परिवेश के अनुरूप कथ्य में भी बदलाव आने लगता है। कथ्य को परिवर्धित करने के लिए विविध परिवेशों की उपयोगिता सिद्ध होती है। परिवेश से ही कथ्य का अंकन उस स्थिति के अनुसार सजीव होता है। इसलिए कथ्य में परिवेश की अनिवार्यता आवश्यक बन जाती है। वर्तमान, भूत और भविष्य आदि सभी कालों में परिवेश का निर्माण होता है और उसी निर्माण में परिवेश कथ्य के लिए अपना योगदान देता है। परिवेश का संबंध कथ्य के निर्माण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

3.8 कथ्य में संवाद :

उपन्यास के तत्वों के अनुसार कथ्य के साथ-साथ संवाद होने के कारण भी उपन्यास का सौंदर्य बढ़ता है। तथा उपन्यास में सजीवता आती है। इसलिए कथ्य के

अंतर्गत संवादों को भी महत्त्व देना स्वाभाविक बन जाता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में जो संवाद बन पड़े है - वह इस प्रकार हैं ।

3.8.1 जोगेश्वरी और राजन के संवाद -

"बड़ी अम्मा!" जोगेश्वरी थोड़ा चौंकी, दरवाजा खोला और राजन देख मुस्कुरा पड़ी - "सारी दुनिया पाँव पसारे सोवत हउवै, पै हमरे राजन खाँ नींद नाहीं। जाने कौन किसिम का लड़का है यह।"

"बड़ी अम्मा, मैं भी चलूँ गंगाजी?"

"जब गंगाजी तोहे जगा दिहलीं तो हम रोके वाले कऊन। चला, पर पहिले जाके टट्टी - दतुअन खतम करिआवा।"[19]

3.8.2 बच्चों का बनारसी गीत -

बच्चों का बनारसी गीत उपन्यास के सौंदर्य में चार चाँद लगाता है - इस गीत को बनारसी कहलिएत ऐसा कहा जाता है -

"एतवार बड़ा अतवार, चर्चा कतवे का नाहीं
सोम्बार बड़ा अम्बार, चरवी कतवे का नाहीं
मंगल बड़ा दंगल, चर्खा कतवे का नाहीं
बुध बड़ा शुध, चर्खा कतवे का नाहीं
बीफै बड़ा ऊफै, चर्खा कतवे का नाहीं
शुक्क बड़ा दुक्ख, चर्खा कतवे का नाहीं
शनीचर बड़ा अनीचर, चर्खा कतवे का नाहीं"[20]

3.8.3 दादी-अम्मा के संवाद (इन्सानियत) -

'पाँच आँगनों वाला घर' की सबसे बुजुर्ग सदस्य है दादी अम्मा। जो 1857 के गदर के बारे में बोलती रहती है। 105 बरस उम्र थी उसकी। गोरों के भागने की बात बताती थी। 1857 के समय एक गोरा सिपाही भागते-भागते उनके माँ के घर के पिछवाडे में आया था। उस वक्त गोरे लोग शासन करनेवाले थे किंतू उस गदर के कारण उन्हें इधर-उधर भागना पड़ा था। ऐसे ही भागते-भागते वे दादी अम्मा के माँ के घर के

पिछवाड़े में आया था और उनकी माँ ने उसे झाड़ों के पीछे पानी पिलाया और पीछे ही पीछे भगा दिया था। ऐसा कुछ वह बताती जाती। दुश्मन को पानी पिलाना यह इन्सानियत के कारण ही हो सकता है। किंतु दादी अम्मा नए जमाने की कुछ बातें सुई में अटकने वाले धागे के समान लगती है तो वह बोलती है - "कुछ गँधात है रे" ... वे कितनी तरह से कितनी दिशाओं में सूँघती, जैसे सूँघकर टोह में ले रही हो - "कही कुछ सड़त बा।"[21] टोहते टोहते एकाएक झाड़ू लेकर दौड़ पड़ती।

दादी अम्मा के इस स्वभाव में उसका अतीत, वर्तमान और भविष्य नजर आने लगता है।

3.8.4 राधेलाल के प्रति परिवार वालों के भाव -

जोगेश्वरी और राधेलाल के संवाद - "तुम्हारे लाड-प्यार ने बिगाड़ रखा है।" घनश्याम कभी भंग ज्यादा छान लेते और घर में तीन-तीन दिन पड़े रहते। घनश्याम की पत्नी रामनगरवाली राधेलाल से संबोधित जो बातें करती है वह -

"भाई है तो यह तो नहीं कि सिर चढ़ा रखो, करते रहें चाहे जो कुछ। यह क्या नशापत्ती किए घर में दिनों-दिन पड़े रहो फिर भी कोई कुछ नहीं कहेगा। निकम्मा बना दिया, घर चलाना पड़ता तो आटा-दाल का भाव मालूम हो जाता।"[22]

3.8.5 संवादो में आदर्श

'पाँच आँगनों वाला घर' के और एक सदस्य सन्नी जो पहले तो परिवार वालों से नकारे जाते है। वही सन्नी बाद में देश के लिए कुछ कार्य करते है। और एक दिन साधु के भैस में राजन को दिखायी देते है राजन उन्हें पहचान लेते है उन दोनों में जो संवाद होते है वह इस प्रकार है। जीवन के बारे में जो उनके विचार है वह इसप्रकार है। राजन और सन्नी के कुछ संवाद जिसमें जीवन की वास्तविकता के साथ-साथ आदर्श की बातें भी नज़र आती है।

"आप खुश तो है ?"

"तुम्हारा मतलब यों बेघर रहकर ? नाखुश भी नहीं हूँ। दरअसल ये दो अलग-अलग जीवन पद्धतियाँ हैं - गृहस्थ की तरह कुछ लोगों से बँधकर रहे, या यों निर्बन्ध होकर इधर से उधर घूमे किसे अच्छा, किसे बुरा कहा जाए। जो जिसमें पड़ गया। पूरा सूखी

न यह कर सकती है, न वह। वह तो आपके मन, आपकी तैयारी, पर निर्भर करता है।''

''घर की याद तो आया करती होगी?

''बहुत। अब कभी-कभी सोचता हूँ यह उस घर का ही बूता था कि मुझ जैसे को इतने सालो बर्दाश्त किया। सम्मिलित परिवार का यह फायदा तो था कि दो चार मुझ जैसे नाकारा भी जीवन निकाल ले जाएँ, अच्छी-अच्छी तृप्ति के साथ.... वे लोग जो अगर परिवार के बाहर हों तो मानसिक रोगी हो जाएँ।''

''यह तो निष्क्रियता, निर्बलता को प्रश्रय देना हुआ।''

''अब सब लड़के राजन या मोहन नहीं होते भाई कि फर्स्ट क्लास सर्विस में आ जाएँ, कुछ एकदम फिसड्डी .... घर समाज का ऐसा ढाँचा हो कि सबका निबाह हो जाए।''

''सम्मिलित परिवार में व्यक्ति का विकास रूक जाता है आपको भी अपने विकास के लिए बाहर निकलना पड़ा। अपनी अलग सम्पत्ति की चाह हर व्यक्ति में स्वाभाविक है, यह चाह ही प्रगति के लिए प्रेरणा बनती है। स्वतन्त्रता चाहिए।''[23]

इन संवादो की ओर देखकर उपन्यास के एक पात्र सन्नी की जीवनानुभव से प्रेरित वास्तविक बातें उनके मुख से निकलती है। तो परिवार के प्रति बदलते परिस्थिति के अनुसार बदलना स्वयं का विकास करना है। यह राजन और रम्मो की दृष्टि से एक अलग सा पारिवारिक आदर्श था।

3.8.6 **संवादो में राष्ट्रीय राजनीतिक जनचेतना के भाव :**

मिश्र जी ने सन्नी और राजन के संवादों द्वारा तत्कालिकन भारत की राजनीतिक स्थिति को शत-प्रतिशत उतारा है। उन दोनों का वार्तालाप कुछ इस प्रकार है।

''तुमने बहुत सारी बातें एक साथ रख दीं। मुझे लगता है कि, जो बड़े पैमाने पर संसार, खासकर देश में होता है उसका असर घरों, उनमें रह रहे मनुष्यों यहाँ तक कि व्यक्तियों की आम जीवन शैली पर भी पड़ता है। ऐसा साफ-साफ भले ही न दिखाई देता हो ... पर होता है। गांधीजी इस रिश्ते को समझते थे इसलिए वे देश, समाज, व्यक्ति, व्यक्ति की जीवनशैली... सबको साथ लेकर चलते थे। उनके लिए स्वतंत्रता का मतलब

सिर्फ अंग्रेजों का जाना नहीं था। स्वदेशी, अहिंसा, अपनी भाषा, आश्रम, सत्याग्रह, आत्मशक्ति ... कुछ भी देखो, वे अपने देश की चीजें ढूँढ-ढूँढकर निकल रहे थे। अंग्रेजों के जाते ही उन्होंने कहा - मेरी हरिजन बस्ती में अपनी एक कुटिया है, मैं वहाँ रहूँगा। नहीं, तुम वहाँ नहीं रह सकते, सुरक्षा को खतरा है। गांधीजी ने कहाँ, तो मतलब मैं कैदी हूँ। आदमी बहुत सारी चीजों पर निर्भर होकर भी अपनी स्वतन्त्रता गँवा बैठता है ... इसलिए स्वतन्त्रता बनाए रखने के लिए ऐसी जीवन शैली चाहिए जिसमें मौतिक चीजें कम-से-कम हो, वे व्यक्ति को दाब न डालें।''[24]

''मतलब आप विकास को नहीं मानते, पंडित नेहरू ने जो विकास का रास्ता चुना था ... औद्‌योगिकीकरण, आधुनिकीकरण ये सब गलत था?

''देश के स्तर पर विकास आर्थिक विकास इससे किसको इनकार हो सकता है... लेकिन यह जरूर देखना होगा कि वह विकास साधारण व्यक्ति तक पहुँचता है या नहीं और उसका सर्वांगीण विकास करेगा या नहीं, या उसे बाहर की चीजों पर और निर्भर बनाता चला जाएगा अगर हम विकास के उस ढाँचे को पकड़ते जिसकी खोज गांधीजी कर रहे थे ... उसे और आगे ढूँढ सकते तो वह संसार के लिए एक मिसाल बन सकती थी। लेकिन हमने विकास का विदेशी फार्मूला उठाया जो आसान और आजमाया हुआ फार्मूला था। चीनी आक्रमण के बाद तो खैर कोई विकल्प ही नहीं रह गया था। काश कुछ ऐसा हो सकता जिसमें देश शक्तिशाली भी हो सकता और गांधीजीवाले रास्ते पर भी हम चले होते। पंडित नेहरू देश की परम्परा की कद्र करते थे। पर आधुनिकीकरण उनके लिए सबसे बड़ा मूल्य था। अब देखिए कैसे असर फैलता है ... कितनी जल्दी गवर्नर, मंत्रियों की ठाठबाटी स्टाईल शुरु हो गई। वे उस रास्ते चल पड़े जहाँ वे जनता के प्रतिनिधि नहीं शासक बन गए। अंग्रेजों की जगह तो उन्होंने ली ही थी, वे उन जैसे ही बनने चल पड़े। जनता उनके लिए हेय, या सिर्फ वोट के वक्त याद करने की चीज होती जा रही है। औद्‌योगिकीकरण के कारण घरेलू उद्‌योग-धन्धे खत्म होते जा रहे हैं। एक सम्मिलित परिवार एक जगह रहकर, घरेलू धन्धे से खा-पी रहा था उसका हर सदस्य अब नौकरी पर आश्रित होता जा रहा है। दूर-दूर बिखर जाएगा, अकेला हो जाएगा। अलगाव बढ़ेगा कल चचेरे भाइयों में अलग होने की बात थी, आज सगे भाइयों मे है, कल कौन जाने बाप-बेटे, माँ-बेटे, पति-पत्नी में ही शुरू हो जाए।''[25]

"अगर लोग अलग रहकर खुश रहते हैं तो उसमें परेशानी की क्या बात है ?"

"खुशी की बनावट बड़ी विचित्र है भैय्या ! ऐसा दिखता है, लेकिन सिर्फ अपने लिए करने से खुशी नहीं मिलती। गौर से देखो तो खुशी दुसरों के लिए कुछ करने से ही आती है। हमारे परिवार वे स्कूल हैं जहाँ हमें निस्वार्थ होने, दुसरों के लिए कुछ करने की बुनियादी शिक्षा मिलती है। सम्मिलित परिवार थे ... तो समाज में स्नेह भी ज्यादा था। जीवन के दुखों को सही ढंग से लेने इस तहर कि वे हमें तोड़ न जाएँ - ऐसा दर्शन भी हमें उस परिवार से मिल जाता था। सुख-दुख ऐसे गड्डमड्ड तरीके से और इतनी जल्दी-जल्दी आते-जाते रहते थे। परिवार से अलग व्यक्तित्व की सहनशक्ति वह नहीं बचेगी।"[26]

सन्नी और राजन इन दोनों के संवादों द्वारा मिश्र जी भारत की स्थिति के साथ एकल परिवार की वास्तविकता को और आवश्यकता को बताते है। ऐसा लगता है कि वे उनके स्वयं के आदर्श विचार ही पात्रों द्वारा कथित होते जाते हैं।

3.8.7 माँ-बाप की जिम्मेदारियों से मुँह फेर लेना

मिश्र जी ने कुछ ऐसे संवादो का सजीव अंकन किया है जिसे पढ़ने से मिश्र जी की गहरी सोच का अंदाजा लग जाता है। राजन और रम्मो के वार्तालाप से रम्मो का स्वार्थि स्वभाव, और माता-पिता के प्रति कृतध्नता नजर आती है। उन दोनों में, आपस मे राजन की बिमार माँ को घर में रखने के लिए रम्मो बिल्कुल तैयार नहीं होती है। इस बात को लेकर दोनों में अनबन होती है वह इस प्रकार -

"रम्मो .... तुम्हारी यही बात मुझे समझ में नही आती' राजन ने ठंडे से समझाया - "अम्मा तो सबकी हैं। उनके लिए इसे जाना चाहिए था कि उसे ... यह क्या है ? अगर मैं जाता हूँ, उन्हें यहाँ लाकर तीमारदारी करता हूँ उनकी सेवा करता हूँ, तो यह मैं अपने सुख-सन्तोष के लिए करता हूँ।"

"लेकिन यहाँ सिर्फ आप नहीं है जनाब ! मैं भी हूँ, मेरे बच्चे हैं। हमारा सुख भी कहीं है।"

"मैंने आपने परिवार में किसी के लिए कुछ नहीं किया अपनी माँ के लिए भी कुछ नहीं कर सकता ? कमाता मैं हूँ या तुम ?" राजन थोडा तेज पड़ा।

"तेज बोलने की जरुरत नहीं है। अगर आप कमाते हैं तो मैं भी घर चलाती हूँ। अगर आप अपनी माँ को लेकर रख सकते हैं तो मैं अपने माँ बाप दोनो को लाकर रख सकती हूँ।"

"हमारे समाज में ऐसा नहीं होता, क्योंकि लड़की अपना घर छोडके लड़के के यहाँ जाती है। लेकिन मैं यह सब नहीं मानता। अगर तुम्हारे घर के किसी व्यक्ति के इलाज या सेवा में मैं काम आ सकता हूँ तो जरुर आना चाहूँगा।"

"मगर मैं वह न करने दूँगी। मेरा घर अस्पताल नहीं है। न यहाँ आपके घर का मरीज आएगा, न मेरे घर का आपको चाहिए तो देख-सुन बेशक आइए, चाहे तो इन्तजाम करा आइए, लेकिन यहाँ लाकर रखने की जरूरत नहीं है। मैं अपने घर में मनहूसियत नहीं चाहती ... चार दिन जिन्दगी के हैं और उन्हें आहें-कराहें सुनने में काट दो, उँह।"[27]

इस तरह के वार्तालाप से रम्मो की कृतघ्नता दिखायी देती है। राजन और रम्मो का बेटा बंटू राजन की बिमारी की खबर सुनकर भी अपने कैरियर की बात करते हुए कैसे टालता है उसका चित्रण इस प्रकार किया है -

रम्मो - "डाक्टर कहते हैं, भगवान न करे कुछ हो गया, बड़े लड़के को बुला लो। तैय्यारी रखो उन्होंने कहा है ..."

"मम्मी! ये हिन्दुस्तानी डॉक्टर ऐसे ही डराया करते हैं, अपनी इम्पोर्टेंस के लिए। साइंस बहुत आगे आ गई है। कुछ नहीं होनेवाला। मेरी एक जरूरी कान्फ्रेंस है। मेरा कैरियर इस पर डिपैंडंट है। मैं अभी नहीं निकल सकता। छोटू है ही।"[28]

इन संवादों से नई पीढ़ी की आत्मकेंद्रित भावना नजर आती है।

निष्कर्ष :

गोविन्द मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का कथ्यगत अनुशीलन करने के लिए कथ्य से संबंधित मुद्दों की ओर ध्यान दिया गया है। उपन्यास में मिश्र जी ने किस प्रकार कथ्य को प्रस्तुत किया है इसी सम्बन्धित चर्चा की गई है। उपन्यास में कथावस्तु का संबंध जितना अधिक होता है उतना ही कथ्य का। फिर भी कथ्य और वस्तु दोनों अपनी जगह कायम रहते हैं। वस्तु केंद्रभूत होती है तो कथ्य आधारभूत होता

है। कथावस्तु के आधार से ही कथ्य का विश्लेषण होता है। कथ्य में कथन होता है, कथन करने का अलग अंदाज होता है। कथन करने के लिए कथावस्तु का आधार लिया जाता है। इसलिए कथावस्तु और कथ्य एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं। मिश्र जी के इस उपन्यास में कथ्य का अधिक्य दिखायी देता है। कथ्य के अंतर्गत जीवन की वास्तविकता का सजीव अंकन किया जाता है। कथा को मनोवैज्ञानिक सामाजिक घात-प्रतिघातों से स्वाभाविक विकसित करते हुए तथा उनके बीच पात्रों की विशेषता में जीते हुए ही कथ्य की सजीव प्रस्थापना होती है। इस उपन्यास का कथ्य अत्यंत सजीव बन पड़ा है। कथ्य का परिचय देकर इस उपन्यास में संबंधित कथ्य का सामर्थ्य बताया गया है।

कथ्य के सामर्थ्य को बताने के लिए कथ्य की आस्वाद परक संवेदना मूल्यगत संवेदना आदि बातों का विश्लेषण किया गया है। उपन्यास में कथ्य की व्याप्ति का अधिक्य दिखाई देता है। कथ्य के विश्लेषण में उपन्यास के पात्रों की जीवन गाथा को प्रस्तुत किया है। जीवन गाथा के प्रति सजग, सतर्क रहनेवाले मिश्र जी के लेखन कला की अलौकिक प्रतिभा नजर आती है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के प्रमुख कथ्य में मोहभंग का दारूण दस्तावेज दिखायी देता है और दूसरा छटपटाती नैतिकता की कथा का अनोखा रूप सामने आ जाता है। उपन्यास में उन कथनों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट हो जाता है जहाँ फ्लैश बैक को मिश्र जी कथित करते हैं। जिससे उपन्यास का सौंदर्य और भी अधिक प्रखरता से उभर आता है। कथन करने से ही उपन्यास की कथावस्तु विकसित होती है। इसी कारण कथ्य में कथन से संबंधित बहुत सी ऐसी बातों का जिक्र होना आवश्यक होता है। कथ्य को सुरूचिपूर्ण बनाने के लिए परिवेश की प्रस्तुति आवश्यक बन जाती है।

अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को सजीव बनाने के लिए विभिन्न परिवेशों का प्रयोग ही यह सूचित करता है कि कथ्य में उचित ताल मेल है कि नहीं? विभिन्न परिवेशों से ही कथ्य सजीव बन पड़ता है। परिवेश के अंतर्गत इस उपन्यास के प्राकृतिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश और ऐतिहासिक परिवेश को स्पष्ट किया है। परिवेश की ओर देखकर लेखक की संवेदनशीलता, कुशलता, संयोजन और पवित्र दृष्टिकोण दिखायी देता है। मिश्र जी इसमें सफल हुए दैदिप्यमान साहित्यकार है जो उपन्यास में सहज सुंदर अभिव्यक्ति

से परिवेश को कथित करते हैं। मिश्र जी ने भी कथा को एकसूत्रता में बाँधते हुए अतीत से वर्तमान में और वर्तमान से भविष्य की ओर ले जाते हुए परिवेश का चित्रांकन किया है जो भूतकाल से होकर आता है फिर भी अपनी राह नहीं छोड़ता। या फिर कथानक कहीं पर छूटता हुआ या अधुरा नहीं लगता। वस्तुविन्यास को कथन करते समय मिश्र जी पानी के बुलबुले की तरह एक कंकर फेंकते है उससे परिवेश का निर्माण होने लगता है।

कथ्य में रोचक और जीवित संवादों का होना भी आवश्यक है। संवादों से कथन करने की पद्धति पर गौर किया जाता है। इस उपन्यास के संवादों में पारिवारिक संवाद जो है उसका सजीव अंकन हुआ है। संवादों में राष्ट्रभाव, सुसंस्कार, आदर्श, वास्तविकता, स्वार्थ और नैतिकता आदि भाव नजर आते हैं। मिश्र जी के इस उपन्यास में जीवन का सच्चा चित्र नजर आता है। उपन्यास मनुष्य जीवन का प्रतिबिंब होता है, इस उक्ति के अनुसार उपन्यास में जीवनानुभव की सच्ची झाँकियाँ देखने को मिलती है। इस उपन्यास का कथ्य अत्यंत सजीव, सराहनीय, सुस्पष्ट और सहजता से अंकित हुआ है।

****

संदर्भ

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
1	हिन्दी शब्दकोश	हिन्दी शब्दकोश	
2	डॉ.आशा मेहता	विचार प्रधान उपन्यास में कथ्य और शिल्प	17,18
3	डॉ.उर्मिला शिरीष	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	43
4	डॉ.आशा मेहता	विचार प्रधान उपन्यास में कथ्य और शिल्प	18
5	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	6
6	डॉ. प्रेमशंकर	मोहभंग का दारूण दस्तावेज (साक्षात्कार जनवरी 99)	106
7	डॉ.रामजी तिवारी	छटपटाती नैतिकता की कथा पाँच आँगनों वाला घर (सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र)	66
8	डॉ.रामजी तिवारी	छटपटाती नैतिकता की कथा पाँच आँगनों वाला घर (सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र)	75
9	डॉ.प्रेम शंकर	मोहभंग का दारूण दस्तावेज (पाँच आँगनों वाला घर)	109
10	डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	43
11	डॉ.आशा मेहता	विचारप्रधान उपन्यासों में कथ्य और शिल्प	20
12	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	3
13	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	5
14	डॉ.रामजी तिवारी	छटपटाती नैतिकता की कथा : पाँच आँगनों वाला घर (सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र)	67
15	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	9
16	वही	वही	16

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
17	डॉ.रामजी तिवारी सं.डॉ.उर्मिला शिरिष	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र - छटपटाती नैतिकता की कथा	66
18	डॉ. प्रेमशंकर	मोहभंग का दारूण दस्तावेज	108
19	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	4
20	वही	वही	13
21	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	8
22	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	9
23	वही	वही	69
24	वही	वही	70
25	वही	वही	70
26	वही	वही	70
27	वही	वही	83
28	वही	वही	63